प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-225316

ग्रहणशील व्यक्ति ज्ञानी होता है – आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 22 जुलाई, 2010

आचार्यश्री महाश्रमण ने अपने दैनिक प्रवचन में कहा कि जिस व्यक्ति में ग्रहण करने की क्षमता नहीं होती वह बाल है और जिसमें ग्रहण करने की क्षमता होती है वह ज्ञानी होता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने गुरुवार को स्थानीय तेरापंथ भवन में उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए आगे कहा कि ज्ञान का लाभ लेने के लिए ग्रहणशीलता आवश्यक होती है, ग्रहणशीलता आदमी को ज्ञानी बना देती है, जो व्यक्ति ग्रहणशील होता है वह अल्प समय में ज्ञानी के पास रहकर ज्ञान अर्जन कर लेता है और अपने ज्ञान का विकास करता है। अग्रहणशील व्यक्ति ज्ञानी के पास चाहे कितना ही रहे लेकिन वह अपने ज्ञान का विकास नहीं कर सकता।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा मनुष्य यह सोचे कि मुझे मानव जीवन मिला है तो मैं अधिक से अधिक ज्ञान को ग्रहण करूं उन्होंने मानवजीवन रूपी कल्प वृक्षों की मीमांसा करते हुए कहा कि पहला कल्पवृक्ष है अर्हतों की भक्ति, उपासना करना है दूसरा भावों की शुद्धि करना, भीतर में जप चलता रहता है, वीतराग पुरुष की भक्ति करना, गुरु की उपासना करना मानव जीवन का फल है। तीसरा है प्राणियों के प्रति दया का भाव रखना अहिंसा का भाव रखें किसी का बूरा न करने की अनुकंपा की भावना जागे, चौथा है साधु को दान देना, गुणों के प्रति अनुराग रखना, गुणों को सहन करना चाहिए, बुराइयों को छोड़ने का भी अभ्यास करना चाहिए। व्यक्ति अपने जीवन में निर्मलता, त्याग, संयम की चेतना के विकास का लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ता है तो संयम का विकास हाता है और मनुष्य की आत्मा का भी कल्याण हो सकता है।

251वां तेरापंथ स्थापना दिवस आज

आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में दिनांक 23 जुलाई से 25 जुलाई तक तीन दिवसीय कार्यक्रम का अयोजन तेरापंथ भवन में किया जाएगा। जिसमें आज (23 जुलाई) आचार्य भिक्षु जन्म एवं बोधि दिवस का भव्य कार्यक्रम का आयोजित होगा। 24 जुलाई को चातुर्मासिक चतुर्दशी एवं 25 जुलाई को श्रेणी आरोहण दीक्षा समारोह का आयोजन होगा जिसमें आचार्यश्री महाश्रमण समणी विनम्रप्रज्ञा, समणी आदर्शप्रज्ञा, समणी ऋषिप्रज्ञा, समणी मौलिकप्रज्ञा, समणी रविप्रज्ञा, समणी दिव्यप्रज्ञा, समणी प्रशमप्रज्ञा को साध्वी दीक्षा प्रदान करेंगे।